खण्ड–5, अंक–1, वर्ष–2017, मु0पृ0 32–35, D.O.I. : 10.22445/avsp.v5i01.9844 शोध पत्र

वृक्षों में चेतन तत्त्व–एक अध्ययन

मीरा वाणी
एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, संस्कृत विभाग
बी0एस0एन0वी0 पी0जी0 कॉलेज, लखनऊ–226001, उ0प्र0, भारत
meeravani85@gmail.com

प्राप्त तिथि–26.06.2017, स्वीकृत तिथि–12.08.2017

सार– वेदों में अनेक स्थलों पर वृक्षों में चेतन तत्त्व का उल्लेख हुआ है। जैव विविधता में जीव–जन्तु एवं सचेतनिक वनस्पतियां(वृक्षादि) दोनों सम्मिलित हैं। दुर्भाग्यवश मनुष्य अपनी कतिपय आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रकृति का भरपूर दोहन कर रहा है। इसके फलस्वरूप वृक्षों–वनस्पतियों की लगभग 49000 प्रजातियां लुप्त होने की कगार पर हैं। वृक्षों–वनस्पतियों में श्वसन क्रियाएं, गति, संवदेनशीलता, अनुकूलन, स्रावण तथा प्रजनन क्रियाओं का होना, चेतन तत्त्व को प्रमाणित करता है।

बीज शब्द– श्वसन–क्रियाएं, गति, संवदेनशीलता, स्रावण, प्रजनन।

Elements of consciousness in plants: a study

Meera Vani
Associate Professor and Head, Department of Sanskrit
B.S.N.V. P.G. College, Lucknow-226001, U.P., India
meeravani85@gmail.com

Abstract- Consciousness among plants has been described from the vedic times. Bio-diversity comprises of both plants and animals. Unfortunately man has been exploiting the nature for his basic needs, which has resulted in the extinction of about 49000 plant species. Plants life activities like respiration, movement, sensitivity, adaptation, secretion, reproduction are performed by the plants which define consciousness in plants.

Key words- Respiration, movement, sensitivity, adaptation, secretion, reproduction.

1. प्रस्तावना– वृक्षों(वनस्पतियों) में चेतन तत्त्व है या नहीं ? यह एक विवादास्पद एवं गम्भीर विषय है। कतिपय विद्वान् वृक्षों–वनस्पतियों में चेतन तत्त्व(जीव) है, स्वीकार करते हैं। अन्य वैज्ञानिकों का कथन है कि वृक्षों में रासायनिक प्रक्रिया से समस्त कार्य स्वतः सम्पन्न होते रहते हैं। अतएव उनमें चेतन तत्व नहीं है। वनस्पति जगत् के वैज्ञानिक जगदीश चंद्र बसु ने यंत्रों की सहायता से यह सिद्ध कर दिया कि प्रत्येक वनस्पति में मानव के समान जीव शक्ति अर्थात् चेतन तत्व होता है। वेदों मे ही नहीं अपितु पुराणों में भी उल्लिखित है कि वृक्ष–वनस्पतियां मानव के समान ही अनुकूल–प्रतिकूल वातावरण में सुख–दुःख का अनुभव करते हैं[1] तथा उनमें संवेदनशीलता, ग्रहण–उत्सर्जन, श्वासोच्छवास, सोने–जागने की क्रियाएं भी होती हैं। अतः वृक्षों में चेतनता है।[2]

2. **वैदिक आधार पर विवेचना–** वैदिक साहित्य में वर्णित वृक्षों में चेतन तत्व– वैदिक साहित्य में वृक्षों की सजीवता का पर्याप्त वर्णन मिलता है। ऋग्वेद में तस्थुष(स्थावर) जीवधारियों में वनस्पतियों को स्थान देकर चेतनता की पुष्टि की गई है।[3] औषधियों में आत्मा के प्रकाशन का भी उल्लेख मिलता है।[4] ऋग्वेद एवं सामवेद में वर्णित है कि वृक्षों के अंदर अग्नि है। वृक्षादि अपने मूल(जड़) से जल ग्रहण करके अग्नि द्वारा संश्लेषण क्रिया के माध्यम से अपना भोजन बनाता है। इस मंत्र में ऑक्सीजन को समान वायु कहा गया है। जो जीव–जन्तुओं के लिए रोग निवारक, स्वास्थ्यवर्धक एवं लाभकारी हैं। वेदों में वृक्षों की कटाई न करने का उल्लेख भी मिलता है क्योंकि उसमें चेतन तत्व है और वे प्रदूषण का निवारण करके वातावरण को शुद्ध रखते हैं।[5] वृक्ष–वनस्पतियां जीव–जन्तुओं के रक्षक तथा उपकारक हैं।[6] वृक्षों से प्राकृतिक संतुलन बना रहता है। वे विविध रोगों से मुक्ति दिलाने के कारण शक्तिदायक भी है।[7] शतपथ ब्राह्मण(6.1. 3.12) में वृक्ष–वनस्पतियों को पशुपति कहा गया है। उनमें वह शक्ति है जो कार्बन डाई ऑक्साइड को ग्रहण कर आक्सीजन को उत्सर्जित करता है।[8] इतना ही नहीं अश्वत्थ(पीपल) के वृक्ष में ऑक्सीजन की मात्रा अधिक होती है। ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं अथर्ववेद में इसका उल्लेख मिलता है।

पीपल को देवों का निवास स्थल कहा गया है। इसके फल, बीज एवं पत्ते औषधि के रूप में प्रयुक्त होते हैं। देव रूप में वृक्षों की पूजा वैदिक काल से होती है जो इक्कीसवीं सदी में भी देखी जाती है।

अश्वत्थो।(ऋ0 1.135.8), अश्वत्थे वो निषदनम्।(यजु0 12.79), अश्वत्थो देवसदनः। (अथर्व0 5.4.3)

वेदों में सैकड़ों स्थानों पर अश्वत्थ(पीपल) को ऊर्जा का भंडार कहा गया है।[9] यह वृक्ष प्राणवायु प्रदाता होने के कारण दिव्य गुणों से युक्त है।[10] अथर्ववेद में वर्णित है कि वनस्पतियां, औषधियां– जीव–जन्तुओं को मानसिक व शारीरिक रोगों से मुक्त कराती हैं।[11] ऐसा भी उल्लेख मिलता है कि मनका को गले में पहनने से गम्भीर से गम्भीर रोगाणुओं को नष्ट किया जा सकता है।[12] वेदों में वर्णित है कि वृक्ष श्वसोच्छवास की क्रिया भी करते हैं।[13]

अथर्ववेद में उल्लिखित है कि वृक्ष खड़े–खड़े सोते हैं[14]– **अस्थुर्वृक्षा ऊर्ध्वस्वप्नाः**। इससे वृक्षों में जीव होने की पुष्टि होती है क्योंकि वह मनुष्य के समान ही सोते और जागते हैं। आज भी रात्रि में आवश्यकता होने पर फल–फूल–पत्ते तोड़े नहीं जाते हैं। जिससे उनकी निद्रा में किसी तरह की बाधा न हो और विज्ञानपरक दृष्टिकोण से देखा जाए तो वृक्षादि रात्रि में कार्बन डाई आक्साइड गैस छोड़ते हैं जिससे मनुष्य को शारीरिक हानि हो सकती है। अथर्ववेद में उल्लिखित है कि जीव मरणोपरान्त वनस्पतियों के रूप में पुनर्जन्म लेता है। अथर्ववेद (18.2.6) में वर्णित है कि हे मृतात्मा। तुम औषधियों में भी अपने शरीर से प्रतिष्ठित होना। एक अन्य मंत्र में कहा गया है कि वृक्षों में चेतन तत्व है अतएव उनके घाव वर्ष भर में पूरित हो जाते हैं।[15] अथर्ववेद में वनस्पतियों में लिंग भेद होता है, का वर्णन है। कुछ वृक्षों में भी नर–नारी भेद होते हैं। शमी तथा अश्वत्थ के वृक्ष का संयोग पुरुष एवं स्त्री के संयोग के तुल्य है। उससे न**वीन वृक्ष** का जन्म होता है।[16] एक अन्य मंत्र में वर्णित है कि आबयु वृक्ष की माता मदावरी है एवं पिता विहल्ह वृक्ष हैं– **विहल्हो नाम ते पिता मदावरी नाम ते माता**। अथर्व0 (6.16.2)। इससे ज्ञात हो कि मदावरी वृक्ष पर विहल्ह की कलम लगाने से आबधु **वृक्ष तैया**र होता है। नर वृक्ष पर नारी वृक्ष का कलम लगाना और नारी वृक्ष पर नर वृक्ष का कलम लगाने[17] का प्रयोग आज भी देखने को मिलता है। पौधों में लिंग भेद एवं स्त्री–पुरुष समागम का स्पष्ट निर्देश किया गया है–

संयोगेन बिना प्राज्ञ कथं गर्भो न जायते। संयोगेन बिना पुष्पं फलं वा न कथं भवेत्।।
तत्र स्त्री–पुरुष गुणा वर्तन्ते समयोगतः । आम्रपुष्पं फलं तद्वत् बीजं शुक्रमथ विदुः।।[18]

चरक संहिता के कल्पस्थान प्रकरण में वत्सक पौधे के सम्बंध में स्त्री–पुरुष भेद किया गया है। जिस वत्सक के फल बड़े हों, पुष्प श्वेत हों पत्ते चिकने हों, वे नरवत्सक हैं। जिसके पुष्प श्याम या अरुण रंग के हों तथा फल एवं डंठल छोटे हों, उन वृक्षों की गणना नारीवत्सक में होती है।[19] पौराणिक ग्रंथों के अनुसार मानव योनि में जन्म लेने से पूर्व मनुष्य को चौरासी लाख योनियों में चक्कर लगाए बिना जीव मानव शरीर को प्राप्त नहीं कर सकता। इन चौरासी लाख योनियों में चार श्रेणियां मानी गई हैं– 1. जरायुज, 2. अण्डज, 3. उद्भिज, 4. स्वेदज।

जरायुज में मनुष्य, पशु आदि आते हैं। अण्डज की श्रेणी में पक्षी, सर्प आदि आते हैं। उद्भिज कोटि में वृक्ष, लता आदि आते हैं। स्वेदज में मक्खी, मच्छर आदि तथा बृहदारण्यकोपनिषद् में मनुष्य और वृक्ष की समानता का वर्णन हुआ है। पुरुष रोम (त्वक्, बाल) है, वृक्षों के पत्ते भी रोमयुक्त होते हैं। दोनों के शरीर पर त्वचा है। वृक्ष की त्वचा को छाल कहते हैं। मनुष्य की त्वचा के कटने पर रक्त निकलता है तथा वृक्ष की छाल काटने पर रस निकलता है। मानव शरीर में मांस है, वृक्ष में शर्करा(खाण्ड) है। मानव शरीर अस्थि निर्मित है एवं वृक्ष में लकड़ी है। दोनों के घाव भरते हैं।[20] वृक्षादि में रस का संचार होता है। इसका संकेत वैशेषिक दर्शन में भी मिलता है।[21] षड्दर्शन समुच्चय पर गुणरत्न(1350 ई0) की टीका में मानव एवं वनस्पति के जीवन के सादृश्य का वर्णन किया गया है। यथा– मानव शरीर का पोषण माँ के दुग्ध, भोजन आदि से होता है उसी प्रकार वृक्ष–वनस्पतियों का पोषण भूमि निहित जल, खाद(उर्वरक), वायु, ऊष्मा आदि से होता है। जिस प्रकार उचित(पौष्टिक) एवं अनुचित(दूषित) आहार से मानव का स्वास्थ्य प्रभावित होता है उसी प्रकार वनस्पतियां भी प्रभावित होती हैं–

मनुष्यशरीरं स्तनक्षीर व्यंजन——तथा वनस्पतिशरीरमपि।

लताओं की तुलना लज्जावती नारी से की है। यथा– छुईमुई लता आदि। उन्होंने ऐसे पौधों का उल्लेख भी किया है जो सोते और जागते भी हैं–

लज्जालुप्रभृतीनां हस्तादिसंसर्गात् पत्रसंकोचादिका परिस्फुटकिया उपलभ्यते।
शमीप्रपुन्नाट——अगस्त्यामलकीकडिप्रभृतीनां स्वापविबोधतः।[22]

जैन दर्शन में भी वनस्पतियों में जीव तत्व है, का उल्लेख मिलता है। इसका पूर्णरूपेण अवलोकन करने पर विदित होता है कि वृक्षों में भी मनुष्यों के समान उदात्त भावना है। वनस्पतियों को तोड़ने, रौंदने आदि से उतनी ही पीड़ा होती है जितनी कि मनुष्य को चोट लगने से या शरीर के कटने से। जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर भगवान् महावीर स्वामी ने वनस्पति पर चलते समय यह अनुभव किया कि उनके शरीर में एक विशेष प्रकार की कष्टदायी पीड़ा हो रही है, यह पीड़ा उन कुचली गई वनस्पतियों की थी। जिस पर भगवान् महावीर चल रहे थे। इससे स्पष्ट होता कि वृक्ष–वनस्पतियों मे चेतनता है। एक स्थान पर ऐसा वर्णित है कि वृक्षों से पत्ते एवं शाखाओं को अलग करना, मानव शरीर के अंगों को काटने के समान कष्टकारी है। वैदिक साहित्य में ऐसी वनस्पतियों का वर्णन भी मिलता है जो रात्रि में प्रकाशयुक्त होने के कारण प्रकाश देती है। यथा–संजीवन बूटी व सोमवल्ली आदि। ऋग्वेद का नवम मंडल वनस्पतियों को समर्पित है।

महाभारत में शांति पर्व के अंतर्गत तर्कपूर्ण युक्तियों द्वारा यह सिद्ध किया गया है कि वनस्पतियों में मनुष्य के समान ही चेतनता है।[23] वृक्षों में पंचमहाभूत किस प्रकार से रहते हैं? वे शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध को किस प्रकार ग्रहण करते हैं? इसमें अतिविस्तार से वर्णित है। भरद्वाज ने भृगु मुनि से प्रश्न किया कि वृक्ष–वनस्पति भूमि से कैसे भोजन ग्रहण करते हैं? उसे कैसे शरीर के विभिन्न भागों में पहुंचाते हैं और कैसे उनका पाचन होता है? भृगु मुनि ने उत्तर दिया कि जैसे मनुष्य कमल नाल को मुख में लगाकर पानी पी सकता है उसी प्रकार पौधे वायु की सहायता से अपनी जड़ों के द्वारा पानी पीते हैं-

वक्त्रेणोत्पलनालेन यथोर्ध्वं जलमाददेत् ।
तथा पवनसंयुक्तः पादैः पिबति पादपः ।।

महाभारत के शांति पर्व में वर्णित है कि वृक्षों में पंचमहाभूतों की उपस्थिति है। शब्द, स्पर्श आदि की सत्ता भी है।[24]

1. वृक्ष ठोस दिखाई पड़ते है किंतु उनमें आकाश है। अतः उसमें फल–फूल की उत्पत्ति होती है।[25]
2. वृक्षों के अंदर ऊष्मा है। इसी कारण उसके पत्ते, फल–फूल आदि मुरझाते एवं झड़ते हैं। अतः उनमें स्पर्श गुण है।[26]
3. वायु एवं विद्युत् की तेज ध्वनि से वृक्षों–वनस्पतियों के फल–फूल झड़कर गिर जाते हैं। अतः वृक्ष सुनते भी हैं।[27]
4. लताएं वृक्ष को चारों ओर से लपेट लेती हैं तथा वृक्ष के ऊपर चढ़ जाती हैं। बिना देखे लिपटना एवं चढ़ना असंभव है इसलिए वृक्ष देखते भी हैं।[28]
5. पवित्र या सुगंध एवं अपवित्र या दुर्गंध का वृक्षों पर प्रभाव पड़ता है। धूप आदि से वृक्ष फलते–फूलते हैं। इससे ज्ञात होता है कि वृक्षों में सूंघने की शक्ति है।[29]
6. वृक्षों में जिह्वा भी होती है क्योंकि वे अपनी मूल(जड़) से जल ग्रहण करते हैं। रोग होने पर वृक्षों की जड़ में दवा डालने पर रोग ठीक हो जाता है। अतः वृक्ष रसनेन्द्रिय हैं।
7. वृक्षों को भी सुख–दुःख का अनुभव होता है और काटे जाने के बाद भी इनकी खंडित शाखाएं पुनः बढ़ जाती हैं। अतः वृक्ष–वनस्पतियों में चेतनता है।[30]

3. **निष्कर्ष**– सहस्रों वर्ष पूर्व वैदिक ऋषियों ने माना है कि पेड़–पौधों में चेतनतत्व है तथा वृक्षों को काटना हिंसा है। आज संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरणविद् सुझाव दे रहे हैं कि हरे वृक्ष की कटाई को हत्या जैसा अपराध घोषित किया जाए। इतना ही नहीं अपितु जीवन–चक्र, श्वसन क्रियाएं तथा पोषण आदि क्रियाएं जीवधारियों एवं वृक्षों–वनस्पतियों में समान होती है। जीवधारी वायु मंडल से ऑक्सीजन ग्रहण करते हैं तथा ऑक्सीजन के बराबर कार्बन डाई–ऑक्साइड छोड़ते हैं किंतु वृक्षादि कार्बन डाई ऑक्साइड ग्रहण कर पर्याप्त मात्रा में ऑक्सीजन देकर वातावरण को जीवनदायक बनाते हैं। वृक्षों के कारण जीव–जंतु शुद्ध वातावरण में श्वाँस लेते हैं। उपर्युक्त प्रमाणों से यह पुष्टि होती है कि वृक्षों–वनस्पतियों में चेतन तत्व है। यह वैज्ञानिकों के द्वारा सर्वसिद्ध एवं सर्वमान्य है।

संदर्भ

1. पौराणिक रहस्यों का रहस्यात्मक अनुशीलन, पृ0 580।
2. ऋग्वेद 1.115.1, यजु0 22.28, अथर्व0 10.3.31।
3. ऋग्वेद 8.43.9।
4. तदैव 6.12.3।
5. तदैव 4.48.17।
6. तदैव 5.41.11, 5.59.2।
7. तदैव 10.146.1–6, 2.13.7,5.4.8, 7.35.5।
8. यजुर्वेद 16.17–19।
9. ऋग्वेद 10.91.6, सामवेद 1824, अथर्व0 5.951।

10. अथर्व0 5.4.31।
11. तदैव 11.6.1।
12. तदैव 2.4.10।
13. तदैव 1.32.1।
14. तदैव 6.44.1।
15. तदैव 8.10.18।
16. अथर्व0 3.6.1, 6.11.1, 6.16.2।
17. हारीत संहिताशरीर स्थान अध्याय एक।
18. हारीत संहिता शरीर स्थान अध्याय एक चरक संहिता के कल्प स्थान प्रकरण में।
19. चरक संहिता कल्पस्थान 5.5।
20. बृहदारण्यकोपनिषद् 3.9.28।
21. वैशेषिक दर्शन 5.2.6।
22. जैनमत प्रकरणम्।
23. महाभारत शांतिपर्व।
24. महाभारत शांतिपर्व अध्याय 184।
25. महाभारत शांतिपर्व अध्याय 184.11।
26. तदैव 184.12।
27. तदैव 184.13।
28. तदैव 184.14।
29. तदैव 184.15।
30. तदैव 184.16।